उपस्थिति चार्ट के माध्यम से सीखना

स्वप्नाली चव्हाण

खेलों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। उनसे उनकी पसन्द की चीज़ों, उनके आस-पास के लोगों और घटनाओं के बारे में बात करने से उनकी आँखों में उत्सुकता और उत्साह की चमक आ जाती है। बच्चों का यही उत्साह उनके सीखने में शिक्षकों के लिए काफ़ी मददगार होता है, विशेषकर आँगनवाड़ी बच्चों के सन्दर्भ में। ऐसी ही कुछ गतिविधियों और खेलों के ज़रिए बच्चों का सीखना कैसे सम्भव हुआ, इसी बारे में है यह आलेख।

चित्र 1: स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर बच्चों के चेहरे पर ख़ुशी भी लाते हैं, और नया सीखने को प्रेरित भी करते हैं

A से क्या होता है?... और B से? अनय की माँ पूछती हैं। अनय डेढ़ साल का हो गया है। उसने हाल ही में बोलना शुरू किया है। "सानू, तुम्हें 'अ' इस तरह से लिखना चाहिए...", स्वानन्दी की माँ उसका हाथ पकड़ती हैं, और उसे 'अ' अक्षर की आकृति बनाना सिखाती हैं। एक अन्य उदाहरण में, किसी बच्चे की माँ उस पर इसलिए ग़ुस्सा करती हैं क्योंकि वह अक्षरों को उल्टा (मिरर इमेज / दर्पण-प्रतिबिम्ब में) लिखता है। यह बच्चा अभी-अभी नर्सरी में दाख़िल हुआ है।

हम अपने आस-पास ऐसी घटनाएँ अकसर देखते हैं। जैसे ही बच्चा विद्यालय जाना शुरू करता है, उसके माता-पिता उसे पढ़ना-लिखना सिखाने की जल्दी में होते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में यह बात गौण हो जाती है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है, उसका अर्थ समझ भी पा रहा है या नहीं। चूँकि माता-पिता उसे एक ढाँचे में ढालने की कोशिश करते हैं, इसलिए वह धीरे-धीरे ख़ुद को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करना भूलने लगता है।

अगर कोई बच्चा बेतरतीब रेखाएँ खींच रहा है, अर्थहीन आकृतियाँ बना रहा है (जो माता-पिता के लिए अर्थहीन होती हैं, लेकिन बच्चे के लिए उनका एक अर्थ, और शायद नाम भी होता है), या टेढ़े-मेढ़े और अजीबोग़रीब चित्र बना रहा है तो माता-पिता को समझना चाहिए कि ये उसके ख़ुद को अभिव्यक्त करने के तरीक़े हैं। बच्चे का भावनात्मक विकास तब होता है जब उसे अपने तरीक़े से अभिव्यक्त करने का अवसर और आज़ादी देते हैं। बाल मनोविज्ञान के कई अध्ययनों से यह बात पता चलती है। आज के सन्दर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) को बुद्धिलब्धि (IQ) से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण भी माना जा रहा है।

महाराष्ट्र के कोल्हापुर स्थित आनन्दी बालभवन फ़ाउण्डेशन में हम 3-12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करते हैं। खेल को आधार मानकर, हम बच्चों के सकल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल, प्रकृति अवलोकन तथा भाषा विकास को बढ़ावा देने के लिए लगातार नई गतिविधियों

को शामिल करते रहते हैं। इन सभी गतिविधियों का प्रयोग करते समय हमारा ध्यान इस बात पर रहता है कि बच्चों को बोलने और अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

पिछले साल जब हम इस बात पर विचार कर रहे थे कि भाषा विकास के लिए और क्या किया जा सकता है, हमें क्वेस्ट (QUEST) की पलावी परियोजना से सम्बन्धित *माझी आँगनवाड़ी* नामक पुस्तक मिली। यह संगठन शिक्षा के रचनात्मक दृष्टिकोण पर काम करता है। हमने बच्चों की उपस्थिति में सुधार लाने, और उनके उभरते लेखन कौशल के विकास पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए इस अभिनव गतिविधि को आज़माने का फ़ैसला किया।

उपस्थिति चार्ट तैयार करना

शुरुआत में, हमने एक बड़े पोस्टर पेपर पर, सात दिनों के लिए सात कॉलम वाला एक साप्ताहिक उपस्थिति चार्ट बनाया। इसमें सीरियल नम्बर और बच्चों के नाम के लिए भी एक-एक कॉलम और था। दिन और तारीख़ें लाल रंग के स्केच पेन से लिखी गईं। हमने देखा कि बच्चे लाल रंग से लिखे शब्दों / पाठ्य को ज़्यादा आसानी से याद रखते हैं। भले ही उन्हें अर्थ समझ में न आए, फिर भी उनका दिमाग़ अक्षरों के आकार को जल्दी से याद कर लेता है। हर बच्चे का नाम अलग-अलग रंग से लिखा। प्रत्येक बच्चे के नाम के आगे और सप्ताह के प्रत्येक दिन के नीचे एक आयताकार खाली स्थान दिया गया था। यह तय किया गया कि प्रत्येक बच्चा प्रतिदिन, सम्बन्धित दिन के नीचे दिए गए बॉक्स में अपना नाम लिखेगा।

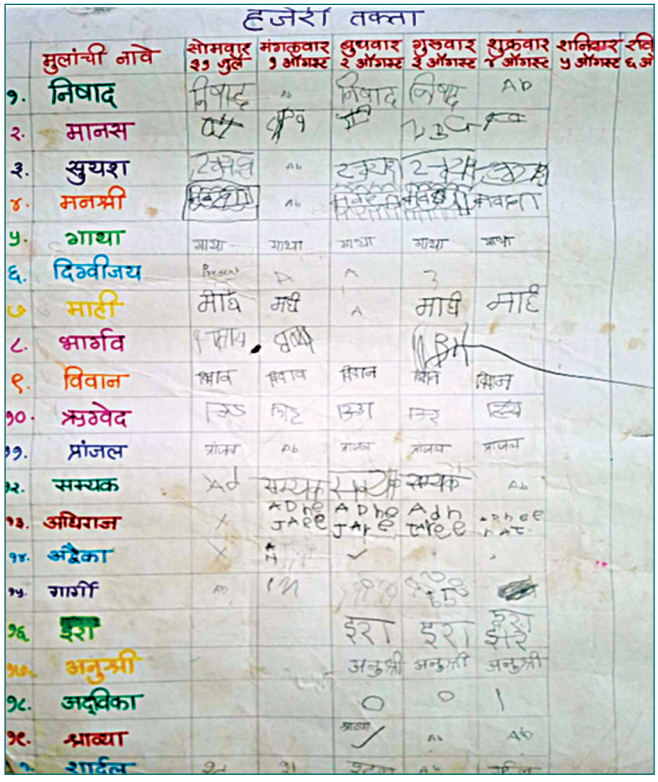

चित्र 2 : उपस्थिति चार्ट, जिस पर बच्चे अपनी उपस्थिति ख़ुद दर्ज करते हैं

गतिविधि का क्रियान्वयन

अगला चरण था बच्चों से चार्ट भरवाने का। प्रत्येक बच्चे को बुलाया गया और उसके नाम के प्रत्येक अक्षर पर उँगली रखकर दो-तीन बार उसका नाम पढ़ा गया। इसी तरह, दिन और तारीख़ भी पढ़कर सुनाई गई। इसके बाद, बच्चे को दिन वाले कॉलम में दिए गए स्थान में अपना नाम लिखने को कहा गया।

पाँच साल से ज़्यादा उम्र के बच्चे पहले से ही अपना नाम लिखना जानते थे, इसलिए उन्होंने जल्दी से अपना नाम लिख दिया। चार से पाँच साल के कुछ बच्चों ने चार्ट पर लिखे नामों को देखकर उनकी नक़ल करने की कोशिश की। कुछ ने केवल गोले, रेखाएँ, चित्र या डिज़ाइन बनाए। चूँकि यह गतिविधि साल भर चलने वाली थी, इसलिए हमने इन बच्चों की प्रगति पर विशेष रूप से ध्यान दिया। हर हफ़्ते, हम बच्चों के नाम एक ही रंग और एक ही क्रमांक में लिखना शुरू करते थे। नतीजा यह हुआ कि बच्चों को अपने नाम का रंग और स्थान याद रहने लगा। हालाँकि वे अभी तक अक्षरों को नहीं पहचानते थे, फिर भी वे रंग और क्रमांक के आधार पर अपने नाम पहचानने की कोशिश करने लगे। हर बार नाम लिखने से पहले हम बिना चूके दिन और तारीख़ पढ़कर सुनाते थे, और अपनी उँगलियों से बच्चों की ओर इशारा करते थे। फिर उनसे कहते थे कि वे हमारे बोलने के बाद दिन और तारीख़ दोहराएँ। हम उनसे पूछते, "क्या तुम अपना नाम ढूँढ़ सकते हो?", और वे रंगों के संकेतों से अपने नाम बता देते। वे अपने नाम के लिए दी गई जगह में अपने-अपने तरीक़े से नाम लिखते रहे।

> **खेलों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। उनके उत्साह ने हमें नए तरीक़ों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया।**

वेदश्री ने शुरुआत में अपने नाम के लिए आइसक्रीम और चॉकलेट के चित्र बनाए। पीयूष ने अपने नाम की आकृति बनाने की कोशिश की और एक डिज़ाइन बनाई। वेदान्त ने रेखाएँ और गोले जैसी कुछ आकृतियाँ बनाईं। विश्वेश ने अपने नाम के कुछ अक्षर लिखने की कोशिश की, और उनके साथ कुछ लकीरें भी खींचीं। ओवी ने अपना नाम लगभग सही रूप से लिखने की कोशिश की, बस कुछ अक्षर छूट गए। हमने नाम मराठी में लिखे, लेकिन आदिनाथ लगातार अपना नाम अँग्रेज़ी में लिखता रहा। अर्णव ने अपना नाम झट से पहचान लिया, और उसे देखकर लिखने की कोशिश करता रहा। जब सभी बच्चे बैठकर अपना नाम लिखने की कोशिश करते, अर्णव लेटकर चार्ट पर धीरे-धीरे अपना नाम लिखता। अगर कोई ग़लती होती तो उसे मिटा देता, और फिर से सही ढंग से लिखने की कोशिश करता। पीयूष भी लगातार इसी तरह की कोशिश कर रहा था। विहान ध्यान से देख-देखकर अपना नाम लिख रहा था। वैसे कुछ बच्चे खेलने की जल्दी में थे, इसलिए फुर्ती से अपना नाम लिखकर भाग जाते थे। हमने इस गतिविधि को 1 जुलाई से शुरू कर सितम्बर के अन्त तक जारी रखा।

बच्चों की प्रगति कैसे हुई

तीन महीने बाद, हमने चार्ट पर बच्चों के नामों के रंग और क्रम बदल दिए। हमेशा की तरह, उनसे अपने नाम ढूँढ़ने को कहा। कुछ बच्चे भ्रमित हो गए। चूँकि वेदान्त और वेदश्री के नामों में 'व' अक्षर (v / w की ध्वनि) समान था, इसलिए दोनों एक दूसरे के नाम को अपना नाम समझने लगे। अर्णव, पीयूष और विहान ने अपने नाम पहचान लिए। ओवी, आदिनाथ और विश्वेश थोड़े भ्रमित हुए। कीर्ति, जो पहले अपना नाम बिल्कुल नहीं पहचान पाती थी, अब सही ढंग से पहचानने लगी। वेदश्री ने जल्द ही चित्र बनाना छोड़ दिया, और अपने नाम के अक्षरों को ध्यान से देखने और लिखने की कोशिश करने लगी। ये सभी बच्चे 4 से 6 साल की उम्र के थे। हम आदिनाथ को बार-बार याद दिलाते रहे कि वह अपना नाम देखकर लिखने की कोशिश करे, लेकिन उसने ज़िद की कि वह अपना नाम अँग्रेज़ी में लिख सकता है। पीयूष, अर्णव, विश्वेश और ओवी ने काफ़ी प्रगति की थी। अब वे इस तरह से नाम लिखने लगे थे जिन्हें पहचाना जा सके। कुछ को अभी भी सूची में अपना नाम ढूँढ़ने में कठिनाई हो रही थी और हम उनकी मदद करते रहे।

कुछ बच्चे अभी भी केवल रेखाएँ और गोले बनाकर ही ख़ुश थे। वे उपस्थिति चार्ट को लेकर इतने उत्सुक थे कि घर जाने से पहले याद दिलाते, "मौसी, मुझे उपस्थिति चार्ट पर अपना नाम लिखना है।" वे यह काम ख़ुशी-ख़ुशी करते थे। बाद में इस बात पर छोटी-मोटी बहस होने लगी कि कौन पहले अपना नाम लिखेगा। हम भी बच्चों के साथ इन पलों का आनन्द ले रहे थे।

अब ध्यान से हर हफ़्ते चार्ट तैयार करना हमारी ज़िम्मेदारी बन गई। ऐसा करते हुए छोटी-छोटी बातें भी सीखीं। मसलन, हम शीट के पीछे वाले हिस्से का भी इस्तेमाल कर सकते हैं, आदि।

हमने कठिनाई के स्तर को कैसे बढ़ाया ?

दिवाली की छुट्टियों के दौरान एक महीने तक यह गतिविधि नहीं की। दिसम्बर में हमने बच्चों के सामने एक नई चुनौती रखी। इस बार सभी नाम एक ही रंग में लिखे। इसके बावजूद कई बच्चे अपने नाम पहचान पा रहे थे। कुछ को फिर से थोड़ी मदद की ज़रूरत पड़ी। आदिनाथ अब अपना नाम मराठी में लिखने लगा था। चार साल का अर्णव अचानक अपने नाम के अँग्रेज़ी अक्षर लिखने लगा, और एक महीने में ही वह फिर से अपनी राह पर आ गया और मराठी में अपना नाम लिखने लगा। चूँकि अर्णव के नाम में 'र' अक्षर शामिल है, इसलिए वह हमसे कहने लगा, "मेरे नाम में 'र' है।" यह हमारे लिए ख़ुशी की बात थी, क्योंकि इसका मतलब था कि बच्चे शब्दों में ध्वनियों को पहचानने लगे थे। अगले महीने एक और प्रयोग किया। हमने बच्चों के नाम वाली काग़ज़ की पट्टियाँ बनाईं, और उन्हें इधर-उधर बिखेर दिया। इसके बाद बच्चों से अपना नाम ढूँढ़ने को कहा। कई बच्चे अपना नाम ढूँढ़ने में कामयाब रहे। कठिनाई बढ़ाने के लिए हमने उनके नामों के अक्षरों को अलग-अलग करके अलग-अलग पर्चियों पर लिख दिया। फिर बच्चों से कहा कि वे पर्चियों को जोड़कर अपने नाम बनाएँ। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आधे से ज़्यादा बच्चों ने ये दोनों गतिविधियाँ पूरी कर लीं। इन गतिविधियों के दौरान बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। उनके उत्साह ने हमें नए तरीक़ों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया, और तब हमने शब्दों में ध्वनियों को पहचानने का एक खेल खेलना शुरू किया। इस खेल में, बच्चे ज़ोर से एक शब्द बोलते, एक बार ताली बजाते, और शब्द में आई प्रत्येक ध्वनि के लिए एक बार कूदते थे। उन्हें यह खेल बहुत पसन्द आया। कुछ ने बेहतरीन प्रयास किए, वहीं कुछ थोड़े भ्रम में पड़ गए। उदाहरण के लिए, तीन ध्वनियों वाले शब्दों में, बच्चे कभी-कभी केवल दो बार ही ताली बजाते थे क्योंकि शब्द का उच्चारण बहुत जल्दी होता था। ऐसी स्थिति में हमने उनकी मदद की, और वे फिर से नए उत्साह के साथ खेलने लगे। अप्रैल में वेदश्री, वेदान्त, पीयूष, ओवी, अर्णव, आदिनाथ जैसे बच्चे, जो पैटर्न, चित्र और रेखाएँ बनाते थे, अब अपने नाम सही ढंग से लिखने लगे थे। यहाँ तक कि विश्वेश जैसे कठिन नाम वाले बच्चे, जिनमें जटिल अक्षरों का प्रयोग होता था, भी अपने नाम अच्छी तरह लिखने लगे थे। अब नाम लिखते समय वे प्रत्येक अक्षर की ध्वनि ज़ोर से बोलने लगे थे। अब वे ऐसी बातें करने लगे थे, "यह मेरा हस्ताक्षर है"; "मौसी, मैं चार्ट पर अपने हस्ताक्षर करना चाहता हूँ"; आदि। अपने नाम पर 'हस्ताक्षर' करने की उनकी ख़ुशी में हम भी शामिल होते थे।

बच्चों को पहले अपने तरीक़े से लिखने का मौक़ा देना चाहिए। चाहे वे रेखाएँ हों, गोले हों या चित्र, क्योंकि इनसे उन्हें धीरे-धीरे लिखना और पढ़ना सीखने में मदद मिलती है। इसके साथ ही शब्द पर उँगली रखकर अक्षरों की ध्वनियाँ निकालने का तरीक़ा सिखाने से उन्हें अक्षर और ध्वनि सम्बन्ध बनाने में मदद मिलती है। इससे उन्हें पढ़ने और लिखने, दोनों का प्रयास करने का प्रोत्साहन मिलता है। उपस्थिति चार्ट गतिविधि को बच्चों ने बहुत उत्साह के साथ किया। हमने दूसरों द्वारा किए गए प्रारम्भिक साक्षरता प्रयोगों के बारे में पढ़ा था और उनकी तस्वीरें भी देखी थीं, लेकिन अब ख़ुद अनुभव किया कि इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चों की लेखन क्षमता कैसे विकसित होती है।

इस साल हम अगले चरण में प्रवेश करेंगे जिसमें नई गतिविधियाँ शामिल होंगी। इनके माध्यम से ऐसे बच्चे अपनी क्षमताओं का विकास करेंगे और ख़ुद को अभिव्यक्त करने के नए तरीक़े खोजेंगे, जिन्होंने अभी-अभी पढ़ना-लिखना शुरू किया है। ये गतिविधियाँ इस बात को सुनिश्चित करने की एक सतत प्रक्रिया है कि बच्चे ज़्यादा पढ़ें, ज़्यादा लिखें (सिर्फ़ अकादमिक दृष्टि से ही नहीं), और ख़ुद को खुलकर अभिव्यक्त करें।

मराठी से अँग्रेज़ी में अनुजा संसारे द्वारा अनुवादित।
अँग्रेज़ी से हिन्दी में नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

स्वप्नाली चव्हाण आनन्दी बालभवन फ़ाउण्डेशन, कोल्हापुर, महाराष्ट्र में एसोसिएट हैं। उनकी रुचि योग अध्ययन और बाल साहित्य में है।

सम्पर्क : swapnalichavan28@gmail.com